दिया। उसने सुल्तान को बहुमूल्य भेंट दी। सिकन्दर लोदी के समक्ष आत्मसमर्पण
जीवित नहीं रहा और 1517 ई0 में उसकी मृत्यु हो गई। सिकन्दर लोदी भी बहुत अधिक समय तक

सिकन्दर लोदी की धार्मिक नीति

लोदी सुल्तान सामान्यतः मुसलमानों के प्रति उदार रहे। उन्होंने धर्म का पालन किया और विद्वानों का आदर किया। प्रशासनिक नियुक्तियों में अफगानों को प्राथमिकता दी। मण्डरेल और अवनन्तगढ़ में हिन्दू मन्दिरों की गिराकर उसके स्थान पर मस्जिदें बनवाई। इस प्रकार सिकन्दर लोदी ने जितने भी युद्ध किए उसमें उसकी धार्मिक भावना

का पता चलता है। सिकन्दर लोदी ने साम्राज्य विस्तार की तरफ अधिक ध्यान न देकर गैर मुस्लिमों के प्रति जेहाद का युद्ध किया। अब्दुल हलीम ने लिखा है कि सिकन्दर लोदी एक कट्टर शासक था। उसने मूर्तिभंजक का कार्य किया।[30]

सिकन्दर लोदी की धर्मान्धता

तीन दृष्टान्त का वर्णन है जिससे पता चलता था कि सिकन्दर लोदी धर्मान्ध था। पहला दृष्टान्त, सिकन्दर लोदी ने विचार व्यक्त किया जब किसी धार्मिक पर्व पर करोड़ों हिन्दू कुरुक्षेत्र में स्नान कर रहे हो तब उस पर हमला कर हिन्दूओं की हत्या कर दी जाए, उसके मन्दिरों को तोड़ा जाए और कुरुक्षेत्र को अपवित्र कर दिया जाए। जब सिकन्दर लोदी ने यह प्रस्ताव अपने दरबारियों के सम्मुख रखा तो उन्होंने कहा कि इस कार्य के लिए उसे पहले उलेमा के सलाह लेनी पड़ेगी। उलेमा के नेता मियाँ अब्दुल्ला ने सिकन्दर लोदी से कहाँ कि यह इंसाफ के प्रतिकूल है।[31] सिकन्दर लोदी इस पर नाराज हो गया और उसने मियाँ अब्दुल्ला को जान से मारने की धमकी दी। मियाँ अब्दुल्ला ने इसका कड़ा विरोध किया और कहाँ कि वह एक अत्याचारी के समक्ष उपस्थित हुआ है और वह इसके लिए पूर्णरूप से तैयार है। सिकन्दर लोदी इस घटना के बाद शान्त हो गया। दूसरी घटना, लखनऊ के गवर्नर आजम हुमायूँ ने बोधन नामक ब्राह्मण ने घोषणा की थी कि इस्लाम एक सच्चा धर्म है किन्तु हिन्दू धर्म भी उससे कम सच्चा नहीं है। उस ब्राह्मण को इस अभियोग पर बन्दी बनाकर उसे इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए कहा। उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया। अन्त में उसे मृत्युदण्ड दिया गया।[32] तीसरा दृष्टान्त अब्दुल्ला और नियामतउल्ला ने लिखा है कि सिकन्दर लोदी ने मथुरा में हिन्दू मन्दिरों को गिराया। जमुना नदी के किनारे हिन्दुओं के धार्मिक कृत्य पर रोक लगा दी। अब्दुल्ला के अनुसार उसने साम्राज्य के सारे मन्दिरों को गिरा दिया परन्तु नियामतउल्ला ने मथुरा के मन्दिरों को गिराने का ही उल्लेख किया है।

कट्टर सुल्तान की हैसियत से सिकन्दर लोदी ने दाढ़ी नहीं रखी। वह मदिरा का सेवन करता था और संगीत का प्रेमी था। उसने उन लोगों को शारीरिक यातना दी जो इस्लाम धर्म के विरूद्ध थे। अपने दरबार में चुने हुए सत्रह इस्लाम धर्म के जानकारों को अपने पास रखा जो उसकी सहायता करते थे। उन्हें कोई ऊँचा पद नहीं दिया गया। सिकन्दर लोदी का यह प्रयास था कि वह अपने को कट्टर और हिन्दू विरोधी सिद्ध करें। वह न तो धर्मान्ध था और न पूर्णरूप से कट्टर था परन्तु उसने ऐसा करने का दिखावा किया। ऐसा करके अपने राज्य के विस्तार की योजना बनाई। सुल्तान बनने के पूर्व उसे उलेमा वर्ग का कटु अनुभव था इसलिए उसने उलेमा वर्ग से सलाह नहीं लिया। हिन्दुओं की दशा उतनी अच्छी नहीं थी जितना कि उसके पिता बहलोल लोदी के समय में।

अपनी बहु-गिनती वाली हिन्दू प्रजा की धार्मिक भावनाओं की बिल्कुल परवाह न करते हुए, "तारीख-ए-दाऊदी" के अनुसार सिकन्दर लोधी ने मूर्तियों के टुकड़े-टुकड़े करके गाय का मांस तोलने के लिये बाटों के स्थान पर कसाइयों को दे दिए। एक बार जब भारी संख्या में हिन्दू कुरुक्षेत्र के स्थान पर एक मेला मनाने के सम्बन्ध में एकत्रित

अधिक देर तक बने रहीं रह सके–यहां के कुछ मकबरे अभी भी देखने को प्राप्त होते हैं। ये मकबरे दो किस्म के थे– (1) कुछ तो तिलंगानी मकबरों जैसे अष्टकोण जैसे तथा (2) कुछ वर्गाकार आकार के थे। पहली किस्म के मकबरे दो सौ साल तक लोकप्रिय बने रहे। इस तरह के मकबरों में मुबारक शाह सय्यद, मुहम्मद शाह सय्यद तथा सिकन्दर लोधी के मकबरे शामिल हैं। ये मकबरे चबूतरों पर बने हुए हैं, जिनके इर्द-गिर्द बरांडे बने हुए हैं। सिकन्दर लोधी का मकबरा 1517 ई० में बनाया गया था, जिस पर दो गुम्बद बने हुए हैं। यह मकबरा अन्दर से बहुत ही खुला तथा सजाया हुआ था।

दूसरी किस्म के मकबरे वर्गाकार थे जिनकी संख्या काफी थी। इस श्रेणी के मकबरों में बड़े खाँ का गुम्बद, छोटे खाँ का गुम्बद, बड़ा गुम्बद, शीश गुम्बद, शिहाब-उद्-दीन ताज खाँ का मकबरा, दादी का गुम्बद तथा पोली का गुम्बद शामिल हैं। इनमें अधिकतर 15वीं शताब्दी में बनाये गये थे। ये मकबरे अष्टकोण मकबरों से